

A person is seen from behind, performing aarti with a kalash (sacred pot) in front of a large, intense fire. The fire is the primary light source, creating a warm, orange glow. The person is wearing a dark garment. The background is filled with the flames of the fire.

# आध्यात्मिक यात्रा

हिंदू पूजन- आरती संग्रह

ओम श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गम गणपतए, वारा वरद सर्वजन जन्मे वशमनाए स्वाहा।

तत्पुरुषाए वीदमहे वक्रतुंडाए धीमाही तन्नो दन्ति प्रचोदयात ॥

ओम शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ॥

इस मंत्र को महागणपति मूल मंत्र के रूप में जाना जाता है। यह सभी गणपति मंत्रों का सबसे शक्तिशाली है। कई लोगों द्वारा माना जाता है कि इस मंत्र को किसी नए उद्यम की शुरुआत से पहले पढ़ना चाहिए ताकि परियोजना के बीच में कोई भी बाधा ना उत्पन्न हो सके। लोग इस मंत्र का उपयोग बाधाओं को हटाने के लिए करते हैं।

वेदांत के अनुसार, प्रबोधन के केवल दो लक्षण हैं, सिर्फ दो संकेत हैं कि आपके भीतर एक उत्त्व  
चेतना की ओर एक परिवर्तन हो रहा है।

पहला लक्षण यह है कि आप चिंता नहीं करते। चीजें आपको अब और परेशान नहीं करती हैं। आप  
दिल हल्का और आनंद से भर जाता है।

दूसरा लक्षण यह है कि आप अपने जीवन में अधिक से अधिक सार्थक संयोग का सामना कर रहे  
हैं, अधिक से अधिक समक्रमिकता। और यह उस बिंदु पर पहुंच जाता है जहां आप वास्तव में  
चमत्कारी चीजें अनुभव करते हैं।"

## अनुक्रमणिका

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए?

श्री गणेश

श्री गजबदन विनायक

श्री गणेश स्तुति (तुलसीदास जी विनय पत्रिका)

श्री गणेश - सुख करता दुखहर्ता (मराठी)

श्री शिवजी

श्री शिवजी (सोमवार व्रत की आरती)

श्री शिवशंकर

श्री बद्रीनाथ

श्री केदारनाथ

श्री जगदीश

श्री सत्यनारायण

श्री बाँकेबिहारी

श्री बालकृष्ण

श्री कुंजबिहारी

श्री जुगलकिशोर

श्री श्यामबाबा

श्री खाटू श्याम

श्री कृष्ण (बुधवार व्रत की आरती)

श्रीमद् भागवत पुराण

श्री रामचन्द्रजी

श्री रामचंद्र

श्री हनुमान (मंगलवार व्रत की आरती)

श्री रामायण

श्री सूर्यदेव

श्री शनिदेव

श्री पुरुषोत्तम देव

श्री नरसिंह भगवान

श्री नरसिंह भगवान

श्री भैरव देव

श्री साईबाबा

श्री सूर्य देव

श्री चन्द्र देव

श्री बृहस्पति देव (बृहस्पतिवार की आरती)

श्री शनि देव (शनिवार की आरती)

श्री शनि देव

श्री शनि देव (चार भुजा तहि छाजै)

श्री दत्तात्रेया (मराठी)

श्री रविवार व्रत

श्री व्यंकटेश देव

श्री अग्रसेन महाराज

श्री चित्रगुप्त महाराज

श्री चित्रगुप्त महाराज

श्री गिरिराज

श्री गोवर्धन

श्री अम्बा माता

श्री लक्ष्मी माता

श्री सन्तोषी माँ (शुक्रवार व्रत की आरती)

श्री सरस्वती माता

श्री वैष्णो देवी

श्री वैष्णों देवी (गुफा में होने वाली आरती)

श्री दुर्गा माता

श्री अहोई माता

श्री एकादशी माता

श्री पार्वती माता

श्री ललिता माता

श्री तुलसी माता

श्री गायत्री माता

श्री शीतला माता

श्री काली माता

श्री राधा माता

श्री सीता माता

श्री अन्नपूर्णा देवी

श्री राणी सती

श्री चामुण्डा देवी

श्री शाकम्भरी देवी

श्री मुम्बादेवी - आद्या शक्ति मां

श्री गीता मैया

श्री गंगा मैया

श्री यमुना मैया

श्री रामायण

श्री गैया मैया

## आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए?

शास्त्रों में आरती को 'आरक्तिका' 'आरर्तिका' और 'नीराजन' भी कहते हैं। आरती का अर्थ है रात्रि / अंधकार को हटाना |

स्कंदपुराण'में कहा गया है-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् पूजनं हरेः । सर्वे संपूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

अर्थात् - पूजन मंत्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन आरती कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

मंदिरों में अनेकों भगवानों की आरती की जाती है, उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने घर में भी आरती करता है, तो वह एक से अधिक भगवानों व देवी-देवता की आरती कर सकता है, परंतु सर्वप्रथम भगवान् श्री गणेश जी की आरती करें तथा अंत में भगवान् श्री हरी विष्णु जी की आरती करें (अर्थात् - ओम जय जगदीश हरे) |

आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बड़ा पुण्य होता है। जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह समस्त पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान् विष्णु के परमपद को प्राप्त होता है।

आरती से घर व आस-पास का वातावरण भी शुद्ध होता है तथा नकारात्मक ऊर्जा भी समाप्त होती है।

## श्री गणेश

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा

माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी

माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी।... जय गणेश

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा

लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥... जय गणेश

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा

माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥... जय गणेश

अन्धे को आँख देत, कोढ़िन को काया

बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥... जय गणेश

'सूर' श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा

माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥... जय गणेश

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा

माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥... जय गणेश

## श्री गजबदन विनायक

आरती गजबदन विनायककी॥ सुर-मुनि-पूजित गणनायककी॥ x2

आरती गजबदन विनायककी॥

एकदन्त शशिभाल गजानन, विघ्नविनाशक शुभगुण कानन॥

शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन, दुःखविनाशक सुखदायक की॥

आरती गजबदन विनायककी॥

ऋद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति, विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति॥

अघ-वन-दहन अमल अबिगत गति, विद्या-विनय-विभव-दायककी॥

आरती गजबदन विनायककी॥

पिङ्गलनयन, विशाल शुण्डधर, धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर॥

लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर, सुर-वन्दित सब विधि लायककी॥



## श्री गणेश स्तुति (तुलसीदास जी विनय पत्रिका)

श्लोक

ॐ गजाननं भूतागणाधि सेवितम्, कपित्थजम्बू फलचारु भक्षणम्।  
उमासुतम् शोक विनाश कारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

स्तुति

गाइये गनपति जगबंदन।

संकर-सुवन भवानी नंदन ॥ 1 ॥

गाइये गनपति जगबंदन।

सिद्धि-सदन, गज बदन, बिनायक।

कृपा-सिंधु, सुंदर सब-लायक ॥ 2 ॥

गाइये गनपति जगबंदन।

मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता।

बिद्या-बारिधि, बुद्धि बिधाता ॥ 3 ॥

गाइये गनपति जगबंदन।

मांगत तुलसिदास कर जोर।

बसहि रामसिय मानस मोरे ॥ 4 ॥

गाइये गनपति जगबंदन।

## श्री गणेश - सुख करता दुखहर्ता (मराठी)

सुख करता दुखहर्ता, वार्ता विघ्नाची  
नूर्वी पूर्वी प्रेम कृपा जयाची  
सर्वांगी सुन्दर उटी शेंदु राची  
कंठी झलके माल मुक्ताफळांची  
जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति  
दर्शनमात्रे मनःकमाना पूर्ति  
जय देव जय देव

रत्नखचित फरा तुझ गौरीकुमरा  
चंदनाची उटी कुमकुम केशरा  
हीरे जडित मुकुट शोभतो बरा  
रुन्झुनती नूपुरे चरनी घागरिया  
जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति  
दर्शनमात्रे मनःकमाना पूर्ति  
जय देव जय देव

लम्बोदर पीताम्बर फनिवर वंदना  
सरल सोंड वक्रतुंडा त्रिनयना  
दास रामाचा वाट पाहे सदना  
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवर वंदना  
जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति  
दर्शनमात्रे मनःकमाना पूर्ति  
जय देव जय देव

शेंदुर लाल चढायो अच्छा गजमुख को  
दोन्दिल लाल बिराजे सूत गौरिहर को  
हाथ लिए गुड लड्डू साई सुरवर को  
महिमा कहे ना जाय लागत हूँ पद को  
जय जय जय जय जय  
जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता  
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता  
जय देव जय देव

अष्ट सिधि दासी संकट को बैरी  
विघन विनाशन मंगल मूरत अधिकारी  
कोटि सूरज प्रकाश ऐसे छबी तेरी  
गंडस्थल मझस्तक झूल शशि बहरी

जय जय जय जय जय  
जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता  
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता  
जय देव जय देव

भावभगत से कोई शरणागत आवे  
संतति संपत्ति सबही भरपूर पावे  
ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे  
गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे

जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता  
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता  
जय देव जय देव

## श्री शिवजी

जय शिव ओंकारा ॐ जय शिव ओंकारा।  
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव...॥  
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।  
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ जय शिव...॥  
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।  
त्रिगुण रूपनिरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ जय शिव...॥  
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी।  
चंदन मृगमद सोहै भाले शशिधारी ॥ ॐ जय शिव...॥  
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।  
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे ॥ ॐ जय शिव...॥  
कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता।  
जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता ॥ ॐ जय शिव...॥  
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।  
प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका ॥ ॐ जय शिव...॥  
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी।  
नित उठि भोग लगावत महिमा अति भारी ॥ ॐ जय शिव...॥  
त्रिगुण शिवजीकी आरती जो कोई नर गावे।  
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय शिव...॥

## श्री शिवजी (सोमवार व्रत की आरती)

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।

हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।

त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।

त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।

सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।

सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।

मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगे॥

पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा।  
भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा॥  
ॐ जय शिव ओंकारा॥

जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला।  
शेष नाग लिपटावत, ओढ़त मृगछाला॥  
ॐ जय शिव ओंकारा॥

काशी में विराजे विश्वनाथ, नन्दी ब्रह्मचारी।  
नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी॥  
ॐ जय शिव ओंकारा॥

त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोइ नर गावे।  
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे॥  
ॐ जय शिव ओंकारा॥

## श्री शिवशंकर

हर हर हर महादेव!

सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव सबके स्वामी।

अविकारी अविनाशी, अज अन्तर्यामी॥

हर हर हर महादेव!

आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।

अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी॥

हर हर हर महादेव!

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तुम त्रिमूर्तिधारी।

कर्ता, भर्ता, धर्ता, तुम ही संहारी॥

हर हर हर महादेव!

रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औठरदानी।

साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता अभिमानी॥

हर हर हर महादेव!

मणिमय-भवन निवासी, अति भोगी रागी।

सदा श्मशान विहारी, योगी वैरागी॥

हर हर हर महादेव!

छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल व्याली।

चिता भस्मतन त्रिनयन, अयनमहाकाली॥

हर हर हर महादेव!

प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीत जटाधारी।

विवसन विकट रूपधर, रुद्र प्रलयकारी॥

हर हर हर महादेव!

शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।

अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि मन-हारी॥

हर हर हर महादेव!

निर्गुण, सगुण, निरुज्ज्वल, जगमय नित्य प्रभो।

कालरूप केवल हर! कालातीत विभो॥

हर हर हर महादेव!

सत्, चित्, आनन्द, रसमय, करुणामय धाता।

प्रेम-सुधा-निधि प्रियतम, अखिल विश्व त्राता॥

हर हर हर महादेव!

हम अतिदीन, दयामय! चरण-शरण दीजै।

सब विधि निर्मल मति कर, अपना कर लीजै॥

हर हर हर महादेव!



## श्री बद्रीनाथ

पवन मंद सुगंध शीतल हेम मंदिर शोभितम्  
निकट गंगा बहत निर्मल श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्  
शेष सुमिरन करत निशादिन धरत ध्यान महेश्वरम्  
शक्ति गौरी गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम्  
जोग ध्यान अपार तीला श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्  
इंद्र चंद्र कुबेर धुनि कर धूप दीप प्रकाशितम्  
सिद्ध मुनिजन करत जै जै बद्रीनाथ विश्वम्भरम्  
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम्  
श्री लक्ष्मी कमला चंवरडोल श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्  
कैलाश में एक देव निरंजन शैल शिखर महेश्वरम्  
राजयुधिष्ठिर करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्  
श्री बद्रीजी के पंच रत्न पदत पाप विनाशनम्  
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य प्राप्यते फलदायकम्

## श्री केदारनाथ

जय केदार उदार शंकर, मन भयंकर दुख हरम्,  
गौरी गणपति स्कंद नंदी, श्री केदार नमाम्यहम्  
शैली सुंदर अति हिमालय, शुभ मंदिर सुंदरम्,  
निकट मंदाकिनी सरस्वती जय केदार नमाम्यहम्  
उदक कुंड है अधम पावन रेतस कुंज मनोहरम्,  
हंस कुंड समीप सुंदर जै केदार नमाम्यहम्  
अन्नपूर्णा सहं अर्पणा काल भैरव शोभितम्,  
पंच पांडव द्रोपदी सम जै केदार नमाम्यहम्  
शिव दिगंबर भस्मधारी अर्द्धचंद्र विभूषितम्  
शीश गंगा कंठ फणिपति जै केदार नमाम्यहम्  
कर त्रिशूल विशाल डमरू ज्ञान गान विशारद्,  
मदमहेश्वर तुंग ईश्वर रूद्र कल्प गान महेश्वरम्  
पंच धन्य विशाल आलय जै केदार नमाम्यहम्,  
नाथ पावन है विशालम् पुण्यप्रद हर दर्शनम्,  
जय केदार उदार शंकर पाप ताप नमाम्यहम्

## श्री जगदीश

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी ! जय जगदीश हरे।  
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का। स्वामी दुःख विनसे मन का।  
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी। स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी।  
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। स्वामी तुम अन्तर्यामी।  
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता। स्वामी तुम पालन-कर्ता।  
मैं मूर्ख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। स्वामी सबके प्राणपति।  
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे। स्वामी तुम ठाकुर मेरे।  
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तैरे॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरे देवा। स्वामी पाप हरे देवा।  
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥...ॐ जय जगदीश हरे।  
श्री जगदीशजी की आरती, जो कोई नर गावे। स्वामी जो कोई नर गावे।  
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपत्ति पावे॥...ॐ जय जगदीश हरे।

## श्री सत्यनारायण

जय लक्ष्मीरमणा श्री जय लक्ष्मीरमणा। सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

रत्नजड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे। नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजे॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

प्रगट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो। बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

दुर्बल भील कठारो इन पर कृपा करी। चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी। सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धर्यो। श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सर्यो॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी। मनवांछित फल दीनो दीनदयाल हरी॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा। धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

श्री सत्यनारायणजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥

जय लक्ष्मीरमणा॥

## श्री बाँकेबिहारी

श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ। कुन्जबिहारी तेरी आरती गाऊँ।  
श्री श्यामसुन्दर तेरी आरती गाऊँ। श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ॥

मोर मुकुट प्रभु शीश पे सोहे। प्यारी बंशी मेरो मन मोहे।  
देखि छवि बलिहारी जाऊँ। श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ॥

चरणों से निकली गंगा प्यारी। जिसने सारी दुनिया तारी।  
मैं उन चरणों के दर्शन पाऊँ। श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ॥

दास अनाथ के नाथ आप हो। दुःख सुख जीवन प्यारे साथ हो।  
हरि चरणों में शीश नवाऊँ। श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ॥

श्री हरि दास के प्यारे तुम हो। मेरे मोहन जीवन धन हो।  
देखि युगल छवि बलि-बलि जाऊँ। श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ॥

आरती गाऊँ प्यारे तुमको रिझाऊँ। हे गिरिधर तेरी आरती गाऊँ।  
श्री श्यामसुन्दर तेरी आरती गाऊँ। श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ॥

## श्री बालकृष्ण

आरती बालकृष्ण की कीजै | अपनों जनम सुफल करि लीजै |  
श्रीयशुदा को परम दुलारै | बाबा की अखियन कौ तारो ||  
गोपिन के प्राणन को प्यारै | इन पै प्राण निछावरी कीजै |  
आरती बालकृष्ण की कीजै ||

बलदाऊ कौ छोटे भैया | कनुआँ कहि कहि बोलत मैया |  
परम मुदित मन लेत वलैया | यह छबि नयननि में भरि लीजै |  
आरती बालकृष्ण की कीजै ||

श्री राधावर सुधर कन्हैया | ब्रजजन कौ नवनीत खवैया |  
देखत ही मन नयन चुरैया | अपनौ सबस इनकूं दीजे |  
आरती बालकृष्ण की कीजै ||

तोतरि बोलनि मधुर सुहावै | सखन मधुर खेलत सुख पावै |  
सोई सुकृति जो इनकूं ध्यावै | अब इनकूं अपनों करि लीजै |  
आरती बालकृष्ण की कीजै ||

## श्री कुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की

गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला॥

श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली॥

लतन में ठाढ़े बनमाली;

भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक;

ललित छवि श्यामा प्यारी की॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥ x2

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसै॥

गगन सों सुमन रासि बरसै;

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग;

अतुल रति गोप कुमारी की॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥ x2

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा॥

स्मरन ते होत मोह भंगा;

बसी सिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच;

चरन छवि श्रीबनवारी की॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥ x2

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू॥

चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू;  
हंसत मूढु मंद,चांदनी चंद, कटत भव फंद;  
टेर सुन दीन भिखारी की॥  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की॥ x2

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की॥  
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की॥



## श्री जुगलकिशोर

आरती जुगलकिशोर कि कीजै | तन मन धन न्यौछावर कीजै |  
रवि शशि कोटि बदन कि शोभा | ताहि निरखि मेरी मन लोभा |  
गौर श्याम मुख निखरत रीझै | प्रभु को स्वरूप नयन भरि पीजै |  
कंचन थार कपूर की बाती | हरि आए निर्मल भई छाती |  
फूलन की सेज फूलन की माला | रतन सिंहासन बैठे नन्दलाला |  
मोर मुकुट कर मुरली सोहे | नटवर वेष देखि मन मोहे |  
ओढ़यो नील-पीत पटसारी, कुंज बिहारी निरखरधारी |  
आरती करत सकल ब्रजनारी | नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी |  
परमानन्द स्वामी अविचल जोड़ी | आरती जुगल किशोर की कीजै |

## श्री श्यामबाबा

ॐ जय श्री श्याम हरे , बाबा जय श्री श्याम हरे |

खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुले|

तन केशरिया बागों, कुण्डल श्रवण पडे ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे|

खेवत धूप अग्नि पर, दिपक ज्योती जले॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

मोदक खीर चुरमा, सुवर्ण थाल भरे |

सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करें ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

झांझ कटोरा और घसियावल, शंख मृदंग धरे|

भक्त आरती गावे, जय जयकार करें ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे |

सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचरें ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

श्रीश्याम बिहारीजी की आरती जो कोई नर गावे|

कहत मनोहर स्वामी मनवांछित फल पावें ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

ॐ जय श्री श्याम हरे , बाबा जय श्री श्याम हरे |

निज भक्तों के तुम ने पूर्ण काज करें ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे....

ॐ जय श्री श्याम हरे , बाबा जय श्री श्याम हरे |

खाटू धाम विराजत , अनुपम रूप धरे ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे...

## श्री खाटू श्याम

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे |  
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ ॐ

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढरे |  
तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ॥ ॐ

गल पुष्पों की माला, सिर पार मुकुट धरे |  
खेवत धूप अग्नि पर दीपक ज्योति जले ॥ ॐ

मोदक खीर चूरमा, सुवर्ण थाल भरे |  
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ॐ

झांझ कटोरा और घडियावल, शंख मृदंग घुरे |  
भक्त आरती गावे, जय - जयकार करे ॥ ॐ

जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे |  
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम - श्याम उचरे ॥ ॐ

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे |  
कहत भक्त - जन, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ

जय श्री श्याम हरे, बाबा जी श्री श्याम हरे |  
निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे ॥ ॐ

## श्री कृष्ण (बुधवार व्रत की आरती)

आरती युगलकिशोर की कीजै | तन मन धन न्योछावर कीजै || टेक ||  
गौरश्याम मुख निरखत रीजे | हरि का स्वरूप नयन भरि पीजै ||  
रवि शशि कोटि बदन की शोभा | ताहि निरखि मेरो मन लोभा ||  
ओडे नील पीत पट सारी | कुंजबिहारी गिरिवरधारी ||  
फूलन की सेज फूलन की माला | रतन सिंहासन बैठे नंदलाला ||  
कंचनथार कपूर की बाती | हरि आये निर्मल भई छाती ||  
श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी | आरती करें सकल ब्रज नारी ||  
नंदनंदन ब्रजभान, किशोरी | परमानंद स्वामी अविचल जोरी ||

## श्रीमद् भागवत पुराण

आरती अतिपावन पुराण की |  
धर्म - भक्ति - विज्ञान - खान की || टेक ||

महापुराण भागवत निर्मल |  
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्ह-फल ||  
परमानन्द-सुधा रसमय फल |  
लीला रति रस रसिनधान की || आरती०

कलिमल मथनि त्रिताप निवारिणी |  
जन्म मृत्युमय भव भयहारिणी ||  
सेवत सतत सकल सुखकारिणी |  
सुमहैषधि हरि चरित गान की || आरती०

विषय विलास विमोह विनाशिनी |  
विमल विराग विवेक विनाशिनी ||  
भागवत तत्व रहस्य प्रकाशिनी |  
परम ज्योति परमात्मा ज्ञान को || आरती०

परमहंस मुनि मन उल्लासिनी |  
रसिक हृदय रस रास विलासिनी ||  
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनी |  
कथा अकिंचन प्रिय सुजान की || आरती०

## श्री रामचन्द्रजी

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्  
नव कंज लोचन, कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

कन्दर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरद सुन्दरम्  
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि-शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम्  
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द्र दशरथ नन्दम्॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्  
आजानुभुज शर चाप-धर, संग्राम जित स्वरदूषणम्॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम्  
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम्॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

मन जाहि रावेऊ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो॥  
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय हित हिय हरषित अली॥  
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन...।

## श्री रामचंद्र

आरती कीजै रामचन्द्र जी की॥हरि-हरि दुष्टदलन सीतापति जी की॥

पहली आरती पुष्पन की माला॥काली नाग नाथ लाये गोपाला॥

दूसरी आरती देवकी नन्दन॥भक्त उबारन कंस निकन्दन॥

तीसरी आरती त्रिभुवन मोहोरत्न सिंहासन सीता रामजी सोहे॥

चौथी आरती चहुं युग पूजादेव निरंजन स्वामी और न दूजा॥

पांचवीं आरती राम को भावे॥रामजी का यश नामदेव जी गावें॥



## श्री हनुमान (मंगलवार व्रत की आरती)

आरती कीजै हनुमान लला की॥ दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥  
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके॥  
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥  
दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाए॥  
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥  
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सवारे॥  
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे॥  
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥  
बाएं भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥  
सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें॥  
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥  
जो हनुमानजी की आरती गावे। बसि बैकुण्ठ परम पद पावे॥

## श्री रामायण

आरती श्री रामायण जी की। कीरति कलित ललित सिया-पी की॥

गावत ब्राह्मादिक मुनि नारद। बालमीक विज्ञान विशारद।  
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥

आरती श्री रामायण जी की।

कीरति कलित ललित सिया-पी की॥

गावत वेद पुरान अष्टदस। छओं शास्त्र सब ग्रन्थन को रस।  
मुनि-मन धन सन्तन को सरबस। सार अंश सम्मत सबही की॥

आरती श्री रामायण जी की।

कीरति कलित ललित सिया-पी की॥

गावत सन्तत शम्भू भवानी। अरु घट सम्भव मुनि विज्ञानी।  
व्यास आदि कविबर्ज बखानी। कागभुषुण्ड गरुड़ के ही की॥

आरती श्री रामायण जी की।

कीरति कलित ललित सिया-पी की॥

कलिमल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।  
दलन रोग भव मूरे अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की॥

आरती श्री रामायण जी की।

कीरति कलित ललित सिया-पी की॥

## श्री सूर्यदेव

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
त्रिभुवन - तिमिर - निकन्दन, भक्त-हृदय-चन्दन॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
सप्त-अश्वरथ राजित, एक चक्रधारी।  
दुःखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
सुर - मुनि - भूसुर - वन्दित, विमल विभवशाली।  
अघ-दल-दलन दिवाकर, दिव्य किरण माली॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
सकल - सुकर्म - प्रसविता, सविता शुभकारी।  
विश्व-विलोचन मोचन, भव-बन्धन भारी॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
कमल-समूह विकासक, नाशक त्रय तापा।  
सेवत साहज हरत अति मनसिज-संतापा॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
नेत्र-व्याधि हर सुरवर, भू-पीड़ा-हारी।  
वृष्टि विमोचन संतत, परहित व्रतधारी॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।  
सूर्यदेव करुणाकर, अब करुणा कीजै।  
हर अज्ञान-मोह सब, तत्त्वज्ञान दीजै॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।

## श्री शनिदेव

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी। सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी॥

श्याम अंग वक्र-दृष्टि चतुर्भुजा धारी। निलाम्बर धार नाथ गज की असवारी॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी॥

क्रीट मुकुट शीश सहज दिपत है लिलारी। मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी॥

मोदक और मिष्ठान चढ़े, चढ़ती पान सुपारी। लोहा, तिल, तेल, उड़द महिषी हैं अति प्यारी॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी॥

देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी। विश्वनाथ धरत ध्यान हम हैं शरण तुम्हारी॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी॥

## श्री पुरुषोत्तम देव

जय पुरुषोत्तम देवा, स्वामी जय पुरुषोत्तम देवा।

महिमा अमित तुम्हारी, सुर-मुनि करें सेवा॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

सब मासों में उत्तम, तुमको बतलाया।

कृपा हुई जब हरि की, कृष्ण रूप पाया॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

पूजा तुमको जिसने सर्व सुख दीना।

निर्मल करके काया, पाप छार कीना॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

मेधावी मुनि कन्या, महिमा जब जानी।

द्रोपदि नाम सती से, जग ने सन्मानी॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

विप्र सुदेव सेवा कर, मृत सुत पुनि पाया।

धाम हरि का पाया, यश जग में छाया॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

नृप दृढधन्वा पर जब, तुमने कृपा करी।

व्रतविधि नियम और पूजा, कीनी भक्ति भरी॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

शूद्र मणीश्रिव पापी, दीपदान किया।

निर्मल बुद्धि तुम करके, हरि धाम दिया॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

पुरुषोत्तम व्रत-पूजा हित चित से करते।

प्रभुदास भव नद से सहजही वे तरते॥

जय पुरुषोत्तम देवा॥

## श्री नरसिंह भगवान

ॐ जय नरसिंह हरे, प्रभु जय नरसिंह हरे।  
स्तम्भ फाड़ प्रभु प्रकटे, स्तम्भ फाड़ प्रभु प्रकटे, जन का ताप हरे॥  
ॐ जय नरसिंह हरे॥  
तुम हो दीन दयाला, भक्तन हितकारी, प्रभु भक्तन हितकारी।  
अद्भुत रूप बनाकर, अद्भुत रूप बनाकर, प्रकटे भय हारी॥  
ॐ जय नरसिंह हरे॥  
सबके हृदय विदारण, दुस्यु जियो मारी, प्रभु दुस्यु जियो मारी।  
दास जान अपनायो, दास जान अपनायो, जन पर कृपा करी॥  
ॐ जय नरसिंह हरे॥  
ब्रह्मा करत आरती, माला पहिनावे, प्रभु माला पहिनावे।  
शिवजी जय जय कहकर, पुष्पन बरसावे॥  
ॐ जय नरसिंह हरे॥

## श्री नरसिंह भगवान

आरती कीजै नरसिंह कुँवर की। वेद विमल यश गाऊँ मेरे प्रभुजी॥

पहली आरती प्रह्लाद उबारे, हिरणाकुश नख उदर विदारे।

दूसरी आरती वामन सेवा, बलि के द्वार पधारे हरि देवा।

तीसरी आरती ब्रह्म पधारे, सहस्रबाहु के भुजा उखारे।

चौथी आरती असुर संहारे, भक्त विभीषण लंक पधारे।

पाँचवीं आरती कंस पछारे, गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले।

तुलसी को पत्र कण्ठ मणि हीरा, हरषि-निरखि गावें दास कबीरा।

## श्री भैरव देव

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा  
जय काली और गौर देवी कृत सेवा ॥ जय भैरव ॥  
तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक  
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥ जय भैरव ॥  
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी  
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥ जय भैरव ॥  
तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे  
चौमुख दीपक दर्शन दुःख खोवे ॥ जय भैरव ॥  
तेल चटकी दधि मिश्रित भाषावाली तेरी  
कृपा कीजिये भैरव, करिए नहीं देरी ॥ जय भैरव ॥  
पाँव घुँघरू बाजत अरु डमरू दम्कावत  
बटुकनाथ बन बालक जल मन हरषावत ॥ जय भैरव ॥  
बटुकनाथ जी की आरती जो कोई नर गावे  
कहे धरनी धर नर मनवांछित फल पावे ॥ जय भैरव ॥



## श्री साईबाबा

आरती उतारे हम तुम्हारी साई बाबा  
चरणों के तैरे हम पुजारी साई बाबा  
विद्या बल बुद्धि, बन्धु माता पिता हो  
तन मन धन प्राण, तुम ही सखा हो  
हे जगदाता अवतारे, साई बाबा  
आरती उतारे हम तुम्हारी साई बाबा  
ब्रह्म के सगुण अवतार तुम स्वामी  
ज्ञानी दयावान प्रभु अंतर्यामी  
सुन लो विनती हमारी साई बाबा  
आरती उतारे हम तुम्हारी साई बाबा  
आदि हो अनंत त्रिगुणात्मक मूर्ति  
सिंधु करुणा के हो उद्धारक मूर्ति  
शिरडी के संत चमत्कारी साई बाबा  
आरती उतारे हम तुम्हारी साई बाबा  
भक्तों की खातिर, जनम लिये तुम  
प्रेम ज्ञान सत्य स्नेह, मरम दिये तुम  
दुखिया जनों के हितकारी साई बाबा  
आरती उतारे हम तुम्हारी साई बाबा

## श्री सूर्य देव

ॐ जय सूर्य भगवान । जय हो तिनकर भगवान ।  
जगत के नेत्र स्वरूपा । तुम हो त्रिगुणा स्वरूपा । धरता सबही सब ध्यान ॥  
ॐ जय सूर्य भगवान ....  
सारथी अरुण हैं प्रभु तुम । श्वेता कमलाधारी । तुम चार भुजा धारी ।  
अश्वा हैं साथ तुम्हारे । कोटि किराना पसारे । तुम हो देव महान ॥  
ॐ जय सूर्य भगवान ....  
उषा काल में जब तुम । उदय चल आते । तब सब दर्शन पाते ।  
फैलाते उज्जीआरा । जागता तब जग सारा । करे तब सब गुण गान ॥  
ॐ जय सूर्य भगवान ....  
भूवर जलचार खेचार । सब के हो प्राण तुम्हीं । सब जीवों के प्राण तुम्हीं ।  
वेद पुराण भखाने । धर्म सभी तुम्हें माने । तुम ही सर्व शक्तिमान ॥  
ॐ जय सूर्य भगवान ....  
पूजन करती विशाएं । पूजे सब एक पार । तुम भुवनो के प्रतिपाल ।  
ऋतुएं तुम्हारी दासी । तुम शशक अविनाशी , शुभकारी अंशुमान ॥  
ॐ जय सूर्य भगवान ...

## श्री चन्द्र देव

ॐ जय सोम देवा, स्वामी जय सोम देवा ।  
दुःख हरता सुख करता, जय आनन्दकारी ।  
रजत सिंहासन राजत, ज्योति तेरी न्यारी ।  
दीन दयाल दयानिधि, भव बन्धन हारी ।  
जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे ।  
सकल मनोरथ दायक, निर्गुण सुखराशि ।  
योगीजन हृदय में, तेरा ध्यान धरें ।  
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, सन्त करें सेवा ।  
वेद पुराण बखानत, भय पातक हारी ।  
प्रेमभाव से पूजें, सब जग के नारी ।  
शरणागत प्रतिपालक, भक्तन हितकारी ।  
धन सम्पत्ति और वैभव, सहजे सो पावे ।  
विश्व चराचर पालक, ईश्वर अविनाशी ।  
सब जग के नर नारी, पूजा पाठ करें ।

## श्री बृहस्पति देव (बृहस्पतिवार की आरती)

ॐ जय बृहस्पति देवा, ॐ जय बृहस्पति देवा ।

छि छिन भोग लगाऊँ, कदली फल मेवा ॥

ॐ जय बृहस्पति देवा ।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।

जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी ॥

ॐ जय बृहस्पति देवा ।

चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता ।

सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ॥

ॐ जय बृहस्पति देवा ।

तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े ।

प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े ॥

ॐ जय बृहस्पति देवा ।

दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी ।

पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी ॥

ॐ जय बृहस्पति देवा ।

सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो ।

विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी ॥

ॐ जय बृहस्पति देवा ।

जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहत गावे ।

जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे ॥

## श्री शनि देव (शनिवार की आरती)

!! जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी,  
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी,  
जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी !!

!! श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी,  
नालाम्बर धार नाथ गज की अवसारी,  
जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी !!

क्रीट मुकुट शीश रजित दिपत हैं लिलारी,  
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी,  
जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी !!

!! मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी,  
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी,  
जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी !!

!! दे दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी,  
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी,  
जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी !!

ॐ शं शनिश्चराय नमः

## श्री शनि देव

जय शनि देवा, जय शनि देवा, जय जय जय शनि देवा॥

अखिल सृष्टि में कोटि-कोटि जन करें तुम्हारी सेवा॥

जय शनि देवा, जय शनि देवा, जय जय जय शनि देवा॥

जा पर कुपित होउ तुम स्वामी, घोर कष्ट वह पावे॥

धन वैभव और मान-कीर्ति, सब पलभर में मिट जावे॥

राजा नल को लगी शनि दशा, राजपाट हर लेवा॥

जय शनि देवा, जय शनि देवा, जय जय जय शनि देवा॥

जा पर प्रसन्न होउ तुम स्वामी, सकल सिद्धि वह पावे॥

तुम्हारी कृपा रहे तो, उसको जग में कौन सतावे॥

ताँबा, तेल और तिल से जो, करें भक्तजन सेवा॥

जय शनि देवा, जय शनि देवा, जय जय जय शनि देवा॥

हर शनिवार तुम्हारी, जय-जय कार जगत में होवे॥

कलियुग में शनिदेव महात्तम, दुःख दरिद्रता धोवे॥

करू आरती भक्ति भाव से भेंट चढ़ाऊं मेवा॥

जय शनि देवा, जय शनि देवा, जय जय जय शनि देवा॥

शनि देव की आरती

## श्री शनि देव (चार भुजा तहि छाजै)

चार भुजा तहि छाजै, गदा हस्त प्यारी।

जय शनिदेव जी॥

रवि नन्दन गज वन्दन, यम अग्रज देवा।

कष्ट न सो नर पाते, करते तब सेवा॥

जय शनिदेव जी॥

तेज अपार तुम्हारा, स्वामी सहा नहीं जावे।

तुम से विमुख जगत में, सुख नहीं पावे॥

जय शनिदेव जी॥

नमो नमः रविनन्दन सब ग्रह सिरताजा।

बन्शीधर यश गावे रखियो प्रभु लाजा॥

जय शनिदेव जी॥

## श्री दत्तात्रेया (मराठी)

त्रिगुणात्मक त्रैमूर्ती दत्त हा जाणा  
त्रिगुणी अवतार त्रैलोक्य राणा  
नेति नेति शब्द न ये अनुमाना  
सुरवर मुनिजन योगी समाधी न ये ध्याना ॥१॥

सबाह्य अभ्यंतरी तू एक दत्त  
अभान्यासी कैसी न कळे ही मात  
पराही परतली तेथे कैचा हा हेत  
जन्म मरणाचा पुरलासे अंत ॥२॥

दत्त येऊनिया उभा ठाकला  
भावे साष्टांगेसी प्रणिपात केला  
प्रसन्न होउनी आशीर्वाद दिधला  
जन्ममरणाचा फेर चुकविला ॥३॥

दत्त दत्त ऐसे लागले ध्यान  
हरपले मन झाले उन्मन  
मी तू पणाची झाली बोलवण  
एका जनार्दनी श्रीदत्त ध्यान ॥४॥



## श्री रविवार व्रत

कहूँ लगि आरती दास करेंगे, सकल जगत जाकि जोति विराजे ॥ टेक

सात समुन्द्र जाके चरणनि बसे, कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम ।

कोटि भानु जाके नख की शोभा, कहा भयो मंदिर दीप धरे हो राम ।

भार उठारह रोमावलि जाके, कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम ।

छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे, कहा भयो नैवेध धरे हो राम ।

अमित कोटि जाके बाजा बाजे, कहा भयो झंकार करे हो राम ।

चार वेद जाके मुख की शोभा, कहा भयो ब्रह्मा वेद पड़े हो राम ।

शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक, नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम ।

हिम मंदार जाको पवन झंकारे, कहा भयो शिर चवर ढुंरे हो राम ।

लख चौरासी बन्दे छुड़ाये, केवल हरियश नामदेव गाये ॥ हो राम

## श्री व्यंकटेश देव

शेषाचल अवतार तारक तूं देवा ।  
सुखर मुनिवर भावें करिती जन सेवा ॥  
कमलारमणा अससी अगणित गुण ठेवा ।  
कमलाक्षा मज रक्षुनि सत्वर वर द्यावा ॥ १ ॥  
जय देव जय देव जय व्यंकटेशा ।

केवळ करुणासिंधु पुरविसी आशा ॥ धृ. ॥  
हे निजवैकुंठ म्हणुनी ध्यातों मी तू तें ।  
दाखविसी गुण कैसे सकलिक लोकाते ॥  
देखुनि तुझे स्वरूप सुख अद्भुत होते ।  
ध्यातां तुजला श्रीपति दृढ मानस होते ॥  
जय देव व्यंकटेशा । महाविष्णू हे परेशा ॥ आरती ओवलीतो ।

तुज चिन्मय अविनाशा ॥ धृ. ॥  
भावार्थ कानगिसी भक्तांपासी तूं मागसी ।  
अज्ञान छेदुनियां ॥  
भवसंकट वारीसी ।  
देवोनी स्वात्मबोधा । परमानंदी तूं ठेवीसी ॥ जय. ॥ १ ॥  
तत्त्वंपदभेदबुद्धी । निरसुन शबलांशउपाधी ॥  
लक्ष्यार्थी जीवेशांचे । करिसी ऐक्य असिपदीं ॥  
जीवन्मुक्ती सुख थोर । देसी परमकृपानिधी ॥ जय. ॥ २ ॥  
विवर्त हे नायरूप । जगद्भासचि असार ॥  
अधिष्ठान पूर्ण याचे ॥  
देव सन्मय साचार ॥  
मौनी म्हणे तुंचि सर्व ।  
भूमानंद हे अपार ॥ जय. ॥ ३ ॥

## श्री अग्रसेन महाराज

जय श्री अग्र हरे, स्वामी जय श्री अग्र हरे..!  
कोटि कोटि नत मस्तक, सादर नमन करें ...!! जय श्री!  
आश्विन शुक्ल एकं, नृप वल्लभ जय!  
अग्र वंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे...!! जय श्री!  
केसरिया थवज फहरे, छात्र चवंर धारे!  
झांझ, नफीरी नौबत बाजत तब द्वारे ...!! जय श्री!  
अग्रोहा राजधानी, इंद्र शरण आये! गोत्र  
अट्टारह अनुपम, चारण गुंड गाये...!! जय श्री!  
सत्य, अहिंसा पालक, न्याय, नीति, समता!  
ईट, रूपए की रीति, प्रकट करे ममता...!! जय श्री!  
ब्रह्ममा, विष्णु, शंकर, वर सिंहनी दीन्हा!  
कुल देवी महामाया, वैश्य करम कीन्हा...!! जय श्री!  
अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गाये!  
कहत त्रिलोक विनय से सुख संपत्ति पाए...!! जय श्री!

## श्री चित्रगुप्त महाराज

ॐ जय चित्रगुप्त हरे, स्वामी जय चित्रगुप्त हरे।

भक्त जनों के इच्छित, फल को पूर्ण करे॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

विघ्न विनाशक मंगलकर्ता, सन्तन सुखदायी।

भक्तन के प्रतिपालक, त्रिभुवन यश छायी॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

रूप चतुर्भुज, श्यामल मूर्ति, पीताम्बर राजौ।

मातु इरावती, दक्षिणा, वाम अङ्ग साजौ॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

कष्ट निवारण, दुष्ट संहारण, प्रभु अन्तर्यामी।

सृष्टि संहारण, जन दुःख हारण, प्रकट हुये स्वामी॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

कलम, दवात, शङ्ख, पत्रिका, कर में अति सोहै।

वैजयन्ती वनमाला, त्रिभुवन मन मोहै॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

सिंहासन का कार्य सम्भाला, ब्रह्मा हर्षये।

तैंतीस कोटि देवता, चरणन में धाये॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

नृपति सौदास, भीष्म पितामह, याद तुम्हें कीन्हा।

वेगि विलम्ब न लायो, इच्छित फल दीन्हा॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

दारा, सुत, भगिनी, सब अपने स्वास्थ्य के कर्ता।

जाऊँ कहाँ शरण में किसकी, तुम तज मैं भर्ता॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

बन्धु, पिता तुम स्वामी, शरण गहूँ किसकी।  
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

जो जन चित्रगुप्त जी की आरती, प्रेम सहित गावैं  
चौरासी से निश्चित छूटैं, इच्छित फल पावैं॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

न्यायाधीश बैकुण्ठ निवासी, पाप पुण्य लिखते।  
हम हैं शरण तिहारी, आस न दूजी करते॥

ॐ जय चित्रगुप्त हरे...॥

## श्री चित्रगुप्त महाराज

श्री विरंचि कुलभूषण, यमपुर के धामी॥  
पुण्य पाप के लेखक, चित्रगुप्त स्वामी॥  
सीस मुकुट, कानों में कुण्डल अति सोहे॥  
श्यामवर्ण शशि सा मुख, सबके मन मोहे॥  
भाल तिलक से भूषित, लोचन सुविशाला॥  
शंख सरीखी गरदन, गले में मणिमाला॥  
अर्ध शरीर जनेऊ, लंबी भुजा छाजौ॥  
कमल दवात हाथ में, पादुक परा भ्राजे॥  
नृप सौदास अनर्थी, था अति बलवाला॥  
आपकी कृपा द्वारा, सुरपुर पग धारा॥  
भक्ति भाव से यह आरती जो कोई गावे॥  
मनवांछित फल पाकर सद्गति पावे॥

## श्री गिरिराज

ओउम जय जय जय गिरिराज, स्वामी जय जय जय गिरिराज  
संकट में तुम राखौ, निज भक्तन की लाज ।। ओउम जय  
इंद्रादिक सब सुर मिल तुम्हारौ ध्यान धरें  
रिषि मुनिजन यश गावें, ते भव सिन्धु तरैं ।। ओउम जय  
सुंदर रूप तुम्हारौ श्याम सिला सोहे'  
वन उपवन लखि-लखि के भक्तन मन मोहे ।। ओउम जय  
मध्य मानसी गंग कलि के मल हरनी  
तापै दीप जलावें, उत्तरे' वैतरणी ।। ओउम जय  
नवल अप्सरा कुण्ड सुहावन पावन सुखकारी  
बायें राधा कुण्ड नहावें महा पापहारी ।। ओउम जय  
तुम्ही मुक्ति के दाता कलियुग के स्वामी  
दीनन के हो रक्षक प्रभु अंतर्यामी ।। ओउम जय  
हू हैं शरण तुम्हारी, गिरिवर गिरधारी  
देवकीनन्दन कृपा करो, हे भक्तन हितकारी ।। ओउम जय  
जो नर दे परिकम्मा पूजन पाठ करें  
गावे' नित्य आरती पुनि नहि' जनम धरें ।। ओउम जय

## श्री गोवर्धन

श्री गोवर्धन महाराज, ओ महाराज,  
तेरे माथे मुकुट विराज रहेओ ।  
तोपे पान चढ़े तोपे फूल चढ़े,  
तोपे चढ़े दूध की धार ।  
तेरी सात कोस की परिक्रमा,  
चक्केश्वर हैं विश्राम ।  
तेरे गले में कंठा साज रहेओ,  
ठोड़ी पे हीरा लाल ।  
तेरे कानन कुंडल चमक रहेओ,  
गिरराज धारण पभु तेरी शरण ।



## श्री अम्बा माता

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।  
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥

जय अम्बे गौरी  
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।  
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको॥

जय अम्बे गौरी  
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजौ।  
रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजौ॥

जय अम्बे गौरी  
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी।  
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥

जय अम्बे गौरी  
कानन कुण्डल शोभित, नासाब्रे मोती।  
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति॥

जय अम्बे गौरी  
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।  
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती॥

जय अम्बे गौरी  
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।  
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥

जय अम्बे गौरी  
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।  
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥

जय अम्बे गौरी

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ।

बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू॥

जय अम्बे गौरी

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।

भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥

जय अम्बे गौरी

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।

मनवान्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥

जय अम्बे गौरी

कन्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।

श्रीमालकेतु में रजत, कोटि रतन ज्योति॥

जय अम्बे गौरी

श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥

जय अम्बे गौरी

## श्री लक्ष्मी माता

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता॥

तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता॥

सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता॥

जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता॥

कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता॥

सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता॥

खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता॥

रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता॥

उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

## श्री सन्तोषी माँ (शुक्रवार व्रत की आरती)

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता॥

अपने सेवक जन को, सुख सम्पत्ति दाता॥

जय सन्तोषी माता॥

सुन्दर चीर सुनहरी माँ धारण कीन्हों।

हीरा पन्ना दमके, तन शृंगार कीन्हों॥

जय सन्तोषी माता॥

गेरू ताल छटा छवि, बदन कमल सोहे।

मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे॥

जय सन्तोषी माता॥

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुंरें प्यारे।

धूप दीप मधुमेवा, भोग धरें न्यारे॥

जय सन्तोषी माता॥

गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामे संतोष कियो।

सन्तोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो॥

जय सन्तोषी माता॥

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।

भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही॥

जय सन्तोषी माता॥

मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।

विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई॥

जय सन्तोषी माता॥

भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजौ।

जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजौ॥

जय सन्तोषी माता॥

दुखी दरिद्री, रोग, संकट मुक्त किये।  
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये॥

जय सन्तोषी माता॥

ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो।  
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो॥

जय सन्तोषी माता॥

शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे।  
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे॥

जय सन्तोषी माता॥

सन्तोषी माता की आरती, जो कोई जन गावे।  
ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सम्पत्ति, जी भरकर पावे॥

जय सन्तोषी माता॥

## श्री सरस्वती माता

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।

सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता॥

जय सरस्वती माता॥

चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी।

सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी॥

जय सरस्वती माता॥

बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।

शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला॥

जय सरस्वती माता॥

देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया।

पैठी मंथरा दासी, रावण संहार किया॥

जय सरस्वती माता॥

विद्या ज्ञान प्रदायिनि, ज्ञान प्रकाश भरो।

मोह अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो॥

जय सरस्वती माता॥

धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।

ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो॥

जय सरस्वती माता॥

माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।

हितकारी सुखकारी ज्ञान भक्ति पावे॥

जय सरस्वती माता॥

जय सरस्वती माता, जय जय सरस्वती माता।

सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता॥

जय सरस्वती माता॥

## श्री वैष्णो देवी

जय वैष्णवी माता, मैया जय वैष्णवी माता।  
हाथ जोड़ तैरे आगे, आरती में गाता॥  
शीश पे छत्र विराजे, मूरतिया प्यारी।  
गंगा बहती चरनन, ज्योति जगे न्यारी॥  
ब्रह्मा वेद पढ़े नित द्वारे, शंकर ध्यान धरे।  
सेवक चंवर डुलावत, नारद नृत्य करे॥  
सुन्दर गुफा तुम्हारी, मन को अति भावे।  
बार-बार देखन को, ऐ माँ मन चावे॥  
भवन पे झण्डे झूलें, घंटा ध्वनि बाजे।  
ऊँचा पर्वत तेरा, माता प्रिय लागे॥  
पान सुपारी ध्वजा नारियल, भेंट पुष्प मेवा।  
दास खड़े चरणों में, दर्शन दो देवा॥  
जो जन निश्चय करके, द्वार तैरे आवे।  
उसकी इच्छा पूरण, माता हो जावे॥  
इतनी स्तुति निश-दिन, जो नर भी गावे।  
कहते सेवक ध्यानू, सुख सम्पत्ति पावे॥

## श्री वैष्णों देवी (गुफा में होने वाली आरती)

भवसागर में गिरा पड़ा हूँ,  
काम आदि गृह में घिरा पड़ा हूँ |  
मोह आदि जाल में जकड़ा पड़ा हूँ | हे ....

न मुझ में बल है न मुझ में विद्या,  
न मुझ में भक्ति न मुझमें शक्ति |  
शरण तुम्हारी गिरा पड़ा हूँ | हे ....

न कोई मेरा कुटुम्ब साथी,  
ना ही मेरा शरीर साथी |  
आप ही उबारो पकड़ के बाहीं | हे ....

चरण कमल की नौका बनाकर,  
मैं पार हुंगा खुशी मनाकर |  
यमदूतों को मार भगाकर | हे ....

सदा ही तेरे गुणों को गाऊँ,  
सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊँ |  
नित प्रति तेरे गुणों को गाऊँ | हे ....

न मैं किसी का न कोई मेरा,  
छाया है चारों तरफ अन्धेरा |  
पकड़ के ज्योति दिखा दो रास्ता | हे ....

शरण पड़े हैं हम तुम्हारी,  
करो यह नैया पार हमारी |  
कैसी यह देर लगाई है दुर्गे | हे ....



## श्री दुर्गा माता

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,  
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

तेरे भक्त जनो पर माता भीर पड़ी है भारी।  
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।  
सौ-सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,  
दुष्टों को तू ही ललकारती।

ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।  
माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।  
पूत-कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता।  
सब पे करुणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,  
दुखियों के दुखड़े निवारती।

ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।  
नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना।  
हम तो मांगें तेरे चरणों में छोटा सा कोना।  
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,  
सतियों के सत को संवारती।

ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।  
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।  
वरद हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरने वाली।  
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,  
भक्तों के कारज तू ही सारती।  
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

## श्री अहोई माता

जय अहोई माता, जय अहोई माता॥  
तुमको निसदिन ध्यावत हर विष्णु विधाता॥

जय अहोई माता॥  
ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला तू ही है जगमाता॥  
सूर्य-चंद्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥

जय अहोई माता॥  
माता रूप निरंजन सुख-सम्पत्ति दाता॥  
जो कोई तुमको ध्यावत नित मंगल पाता॥

जय अहोई माता॥  
तू ही पाताल बसंती, तू ही है शुभदाता॥  
कर्म-प्रभाव प्रकाशक जगनिधि से त्राता॥

जय अहोई माता॥  
जिस घर थारो वासा वाहि में गुण आता॥  
कर न सके सोई कर ले मन नहीं धड़काता॥

जय अहोई माता॥  
तुम बिन सुख न होवे न कोई पुत्र पाता॥  
खान-पान का वैभव तुम बिन नहीं आता॥

जय अहोई माता॥  
शुभ गुण सुंदर युक्ता क्षीर निधि जाता॥  
रतन चतुर्दश तोकू कोई नहीं पाता॥

जय अहोई माता॥  
श्री अहोई माँ की आरती जो कोई गाता॥  
उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता॥

जय अहोई माता॥

## श्री एकादशी माता

ॐ जय एकादशी, जय एकादशी, जय एकादशी माता॥

विष्णु पूजा व्रत को धारण कर, शक्ति मुक्ति पाता॥

ॐ जय एकादशी...॥

तेरे नाम गिनाऊं देवी, भक्ति प्रदान करनी॥

गण गौरव की देनी माता, शास्त्रों में वरनी॥

ॐ जय एकादशी...॥

मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष की उत्पन्ना, विश्वतारनी जन्मी॥

शुक्ल पक्ष में हुई मोक्षदा, मुक्तिदाता बन आई॥

ॐ जय एकादशी...॥

पौष के कृष्णपक्ष की, सफला नामक है।

शुक्लपक्ष में होय पुत्रदा, आनन्द अधिक रहै॥

ॐ जय एकादशी...॥

नाम षटतिला माघ मास में, कृष्णपक्ष आवै।

शुक्लपक्ष में जया, कहावै, विजय सदा पावै॥

ॐ जय एकादशी...॥

विजया फागुन कृष्णपक्ष में शुक्ला आमलकी।

पापमोचनी कृष्ण पक्ष में, चैत्र महाबलि की॥

ॐ जय एकादशी...॥

चैत्र शुक्ल में नाम कामदा, धन देने वाली॥

नाम बरुथिनी कृष्णपक्ष में, वैसाख माह वाली॥

ॐ जय एकादशी...॥

शुक्ल पक्ष में होय मोहिनी अपरा ज्येष्ठ कृष्णपक्षी॥

नाम निर्जला सब सुख करनी, शुक्लपक्ष रखी॥

ॐ जय एकादशी...॥

योगिनी नाम आषाढ में जानों, कृष्णपक्ष करनी।

देवशयनी नाम कहायो, शुक्लपक्ष धरनी॥

ॐ जय एकादशी...॥

कामिका श्रावण मास में आवै, कृष्णपक्ष कहिए।

श्रावण शुक्ला होय पवित्रा आनन्द से रहिए॥

ॐ जय एकादशी...॥

अजा भाद्रपद कृष्णपक्ष की, परिवर्तिनी शुक्ला।

इन्द्रा आश्विन कृष्णपक्ष में, व्रत से भवसागर निकला॥

ॐ जय एकादशी...॥

पापांकुशा है शुक्ल पक्ष में, आप हरनहारी।

रमा मास कार्तिक में आवै, सुखदायक भारी॥

ॐ जय एकादशी...॥

देवोत्थानी शुक्लपक्ष की, दुखनाशक मैया।

पावन मास में करुं विनती पार करो नैया॥

ॐ जय एकादशी...॥

परमा कृष्णपक्ष में होती, जन मंगल करनी।

शुक्ल मास में होय पद्मिनी दुख दारिद्र हरनी॥

ॐ जय एकादशी...॥

जो कोई आरती एकादशी की, भक्ति सहित गावै।

जन गुरदिता स्वर्ग का वासा, निश्चय वह पावै॥

ॐ जय एकादशी...॥

## श्री पार्वती माता

जय पार्वती माता जय पार्वती माता।

ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता॥

जय पार्वती माता

अरिकुल पद्म विनाशिनि जय सेवक त्राता।

जग जीवन जगदम्बा, हरिहर गुण गाता॥

जय पार्वती माता

सिंह को वाहन साजे, कुण्डल हैं साथा।

देव वधू जस गावत, नृत्य करत ताथा॥

जय पार्वती माता

सतयुग रूपशील अतिसुन्दर, नाम सती कहलाता।

हेमांचल घर जन्मी, सखियन संग राता॥

जय पार्वती माता

शुम्भ निशुम्भ विदारे, हेमांचल स्थाता।

सहस्र भुजा तनु धरि के, चक्र लियो हाथा॥

जय पार्वती माता

सृष्टि रूप तुही हैं जननी शिवसंग रंगराता।

नन्दी भृंगी बीन लही सारा जग मदमाता॥

जय पार्वती माता

देवन अरज करत हम चित को लाता।

गावत दे दे ताली, मन में रंगराता॥

जय पार्वती माता

श्री प्रताप आरती मैया की, जो कोई गाता।

सदासुखी नित रहता सुख सम्पत्ति पाता॥

जय पार्वती माता

## श्री ललिता माता

श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी। राजेश्वरी जय नमो नमः॥

करुणामयी सकल अघ हारिणी। अमृत वर्षिणी नमो नमः॥

जय शरणं वरणं नमो नमः।

श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी॥

अशुभ विनाशिनी, सब सुख दायिनी। खल-दल नाशिनी नमो नमः॥

भण्डासुर वधकारिणी जय माँ। करुणा कलिते नमो नमः॥

जय शरणं वरणं नमो नमः।

श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी॥

भव भय हारिणी, कष्ट निवारिणी। शरण गति दो नमो नमः॥

शिव भामिनी साधक मन हारिणी। आदि शक्ति जय नमो नमः॥

जय शरणं वरणं नमो नमः।

जय त्रिपुर सुन्दरी नमो नमः॥

श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी।

राजेश्वरी जय नमो नमः॥

## श्री तुलसी माता

जय जय तुलसी माता, सबकी सुखदाता वर माता।

सब योगों के ऊपर, सब रोगों के ऊपर,

रुज से रक्षा करके भव त्राता।

जय जय तुलसी माता।

बहु पुत्री है श्यामा, सूर वल्ली है ग्राम्या,

विष्णु प्रिय जो तुमको सेवे, सो नर तर जाता।

जय जय तुलसी माता।

हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित,

पतित जनों की तारिणि, तुम हो विख्याता।

जय जय तुलसी माता।

लेकर जन्म बिजन में आई दिव्य भवन में,

मानव लोक तुम्हीं से सुख सम्पत्ति पाता।

जय जय तुलसी माता।

हरि को तुम अति प्यारी श्याम वर्ण सुकुमारी,

प्रेम अजब है श्री हरि का तुम से नाता।

जय जय तुलसी माता।

## श्री गायत्री माता

जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।

सत् मारण पर हमें चलाओ, जो हैं सुखदाता॥

जयति जय गायत्री माता...

आदि शक्ति तुम अलख निरञ्जन जग पालन करी॥

दुःख, शोक, भय, क्लेश, कलह दारिद्र्य दैन्य हरी॥

जयति जय गायत्री माता...

ब्रह्म रुपिणी, प्रणत पालिनी, जगतधातृ अम्बे।

भवभयहारी, जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे॥

जयति जय गायत्री माता...

भयहारिणि भवतारिणि अनघे, अज आनन्द राशी।

अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी॥

जयति जय गायत्री माता...

कामधेनु सत् चित् आनन्दा, जय गंगा गीता।

सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री सीता॥

जयति जय गायत्री माता...

ऋग्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।

कुण्डलिनी सहस्रार, सुषुम्ना, शोभा गुण गरिमे॥

जयति जय गायत्री माता...

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्मणी, राधा, रुद्राणी।

जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी॥

जयति जय गायत्री माता...

जननी हम हैं, दीन, हीन, दुःख, दरिद्र के घेरे।

यदपि कुटिल, कपटी कपूत, तऊ बालक हैं तेरे॥

जयति जय गायत्री माता...



स्नेहसनी करुणामयि माता, चरण शरण दीजौ।  
बिलख रहे हम शिशु सुत तैरे, दया दृष्टि कीजौ॥

जयति जय गायत्री माता...

काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरियो।  
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करियो॥

जयति जय गायत्री माता...

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि त्राता।  
सत् मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥

जयति जय गायत्री माता...

## श्री शीतला माता

जय शीतला माता, मैया जय शीतला माता।

आदि ज्योति महारानी सब फल की दाता॥

ॐ जय शीतला माता...

रतन सिंहासन शोभित, श्वेत छत्र भाता।

ऋद्धि-सिद्धि चँवर डोलावें, जगमग छवि छाता॥

ॐ जय शीतला माता...

विष्णु सेवत ठाढ़े, सेवें शिव धाता।

वेद पुराण वरणत पार नहीं पाता॥

ॐ जय शीतला माता...

इन्द्र मृदङ्ग बजावत चन्द्र वीणा हाथा।

सूरज ताल बजावै नारद मुनि गाता॥

ॐ जय शीतला माता...

घण्टा शङ्ख शहनाई बाजै मन भाता।

करै भक्त जन आरती लखि लखि हर्षाता॥

ॐ जय शीतला माता...

ब्रह्म रूप वरदानी तुही तीन काल ज्ञाता।

भक्तन को सुख देती मातु पिता भ्राता॥

ॐ जय शीतला माता...

जो जन ध्यान लगावे प्रेम शक्ति पाता।

सकल मनोरथ पावे भवनिधि तर जाता॥

ॐ जय शीतला माता...

रोगों से जो पीड़ित कोई शरण तेरी आता।

कोढ़ी पावे निर्मल काया अन्ध नेत्र पाता॥

ॐ जय शीतला माता...

बांझ पुत्र को पावे दारिद्र कट जाता।  
ताको भजै जो नाहीं सिर धुनि पछताता॥  
ॐ जय शीतला माता...  
शीतल करती जन की तू ही है जग त्राता।  
उत्पत्ति बाला बिनाशन तू सब की माता॥  
ॐ जय शीतला माता...  
दास नारायण कर जोरी माता।  
भक्ति आपनी दीजै और न कुछ माता॥  
ॐ जय शीतला माता...

## श्री काली माता

जय काली माता, मा जय महा काली माँ |  
रतबीजा वध कारिणी माता |  
सुरनर मुनि ध्याता, माँ जय महा काली माँ ||  
दक्ष यज्ञ विदवंस करनी माँ शुभ निशूँभ हरति |  
मधु और कैतभा नासिनी माता |  
महेशासुर मारदिनी...ओ माता जय महा काली माँ ||  
हे हीमा गिरिकी नंदिनी प्रकृति रचा इत्ति |  
काल विनासिनी काली माता |  
सुरंजना सूख दात्री हे माता ||  
अननधम वस्तरौं दायनी माता आदि शक्ति अंबे |  
कनकाना कना निवासिनी माता |  
भगवती जगदंबे ... ओ माता जय महा काली माँ ||  
दक्षिणा काली आध्या काली ...काली नामा रूपा |  
तीनो लोक विचारिती माता धर्मा मोक्ष रूपा ||  
| जय महा काली माँ |

## श्री राधा माता

ॐ जय श्री राधा जय श्री कृष्ण

ॐ जय श्री राधा जय श्री कृष्ण

श्री राधा कृष्णाय नमः ..

घूम घुमारो घामर सोहे जय श्री राधा

पट पीताम्बर मुनि मन मोहे जय श्री कृष्ण .

जुगल प्रेम रस झम झम झमकै

श्री राधा कृष्णाय नमः ..

राधा राधा कृष्ण कन्हैया जय श्री राधा

भव भय सागर पार लगैया जय श्री कृष्ण .

मंगल मूर्ति मोक्ष करैया

श्री राधा कृष्णाय नमः ..

## श्री सीता माता

सीता बिराजथि मिथिलाधाम सब मिलिकय करियनु आरती।  
संगहि सुशोभित लछुमन-राम सब मिलिकय करियनु आरती॥

विपदा विनाशिनि सुखदा चराचर, सीता धिया बनि अयली सुनयना घर  
मिथिला के महिमा महान...सब मिलिकय करियनु आरती॥सीता बिराजथि...

सीता सर्वेश्वरि ममता सरोवर, बायँ कमल कर दायाँ अभय वर  
सौम्या सकल गुणधाम.....सब मिलिकय करियनु आरती॥ सीता बिराजथि...

रामप्रिया सर्वमंगल दायिनि, सीता सकल जगती दुःखहारिणि  
करथिन सभक कल्याण...सब मिलिकय करियनु आरती॥ सीता बिराजथि...

सीतारामक जोड़ी अतिभावन, नैहर सासुर कयलनि पावन  
सेवक छथि हनुमान...सब मिलिकय करियनु आरती॥सीता बिराजथि...

ममतामयी माता सीता पुनीता, संतन हेतु सीता सदिसन सुनीता  
धरणी-सुता सबठाम...सब मिलिकय करियनु आरती ॥ सीता बिराजथि...

शुक्ल नवमी तिथि वैशाख मासे, 'चंद्रमणि' सीता उत्सव हुलासे  
पायब सकल सुखधाम...सब मिलिकय करियनु आरती॥

सीता बिराजथि मिथिलाधाम सब मिलिकय करियनु आरती॥

## श्री अन्नपूर्णा देवी

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम...

जो नहीं ध्यावे तुम्हें अम्बिके, कहां उसे विश्रामा  
अन्नपूर्णा देवी नाम तिहारो, लेत होत सब काम॥ बारम्बार...

प्रलय युगान्तर और जन्मान्तर, कालान्तर तक नामा  
सुर सुरों की रचना करती, कहाँ कृष्ण कहाँ राम॥ बारम्बार...

चूमहि चरण चतुर चतुरानन, चारु चक्रधर श्यामा  
चंद्रचूड़ चन्द्रानन चाकर, शोभा लखहि ललामा॥ बारम्बार...

देवि देव! दयनीय दशा में दया-दया तब नामा  
त्राहि-त्राहि शरणागत वत्सल शरण रूप तब धामा॥ बारम्बार...

श्रीं, ह्रीं श्रद्धा श्री ऐ विद्या श्री क्लीं कमला कामा  
कांति, भ्रांतिमयी, कांति शांतिमयी, वर दे तू निष्कामा॥ बारम्बार...

## श्री राणी सती

ॐ जय श्री राणी सती माता , मैया जय राणी सती माता ,

अपने भक्त जनन की दूर करन विपत्ती ॥

अवनि अनन्तर ज्योति अखंडीत , मंडितचहुँक कुंभा

दुर्जन दलन खडग की विद्युतसम प्रतिभा ॥

मरकत मणि मंदिर अतिमंजुल , शोभा लखि न पड़े,

ललित ध्वजा चहुँ ओरे , कंचन कलश धरे ॥

घंटा घनन घडावल बाजे , शंख मृदुग घूरे,

किन्नर गायन करते वेद ध्वनि उचरे ॥

सप्त मात्रिका करे आरती , सुरगण ध्यान धरे,

विविध प्रकार के व्यंजन , श्रीफल भेट धरे ॥

संकट विकट विदारनि , नाशनि हो कुमति,

सेवक जन हृदय पटले , मृदूल करन सुमति,

अमल कमल दल लोचनी , मोचनी त्रय तापा ॥

त्रिलोक चंद्र मैया तेरी , शरण गहुँ माता ॥

या मैया जी की आरती, प्रतिदिन जो कोई गाता,

सदन सिद्ध नव निध फल , मनवांछित पावे ॥

## श्री चामुण्डा देवी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी। निशिदिन तुमको ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी॥ जय अम्बे  
माँग सिन्दूर विराजत, टीको, मृगमद को। उज्जवल से दोउ नयना, चन्द्रबदन नीको॥ जय अम्बे

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गलमाला, कंठ हार साजे॥ जय अम्बे  
हरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःख हारी॥ जय अम्बे

कानन कुण्डल शोभित, नासाबे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम जोती॥ जय अम्बे



शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्र-विलोचन नयना, निशदिन मदमाती॥ जय अम्बे

चण्ड-मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे। मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भय दूर करे॥ जय अम्बे  
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय अम्बे

चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु॥ जय अम्बे  
तुम हो जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय अम्बे

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥ जय अम्बे  
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥ जय अम्बे

## श्री शाकुम्भरी देवी

शताक्षी दयालु की आरती कीजो  
तुम परिपूर्ण आदि भवानी मां, सब घट तुम आप बखानी मां  
शाकुम्भरी अम्बाजी की आरती कीजो  
तुम्हीं हो शाकुम्भर, तुम ही हो सताक्षी मां  
शिवमूर्ति माया प्रकाशी मां,  
शाकुम्भरी अम्बाजी की आरती कीजो  
नित जो नर-नारी अम्बे आरती गावे मां  
इच्छा पूर्ण कीजो, शाकुम्भर दर्शन पावे मां  
शाकुम्भरी अम्बाजी की आरती कीजो  
जो नर आरती पढ़े पढ़ावे मां, जो नर आरती सुनावे मां  
बस बैकुंठ शाकुम्भर दर्शन पावे  
शाकुम्भरी अम्बाजी की आरती कीजो।

## श्री मुम्बादेवी - आद्या शक्ति मां

जय आद्या शक्ति मां जय आद्या शक्ति,  
अखंड ब्रह्मांड निपाव्या अखंड ब्रह्मांड निपाव्या।  
पड़वे पंडित मां जयो-जयो मां जगदम्बे॥ टेका  
द्वितीयावे स्वरूप शिव-शक्ति जाणु, मां शिवशक्ति,  
ब्रह्मा गणपति गाए, ब्रह्मा गणपति गाए।  
हर गाए हर मां जयो-जयो मां जगदम्बे।  
बीज तृतीया रूप त्रिभुवनमां बैठा मां त्रिभुवना।  
दया थकी त्रिवेणी, दया थकी त्रिवेणी,  
तू त्रिवेणी मां जयो-जयो मां जगदम्बे।  
चौथे चतुरा महालक्ष्मी मां सचराचर बाख्या,  
मां सचराचर बाख्या।  
चार भुजा चौदिशा चार भुजा चौदिशा,  
प्रगट्या दक्षिण, मां जयो-जयो मां जगदम्बे।  
पंचमी पंच रूपी पंचमी गुण पद्मा मां पंचमी।  
पंच तत्व त्यां सोहिए पंच तत्व क्यां सोहिए।  
पंचि तत्वों मां, जयो-जयो मां जगदम्बे।  
षष्टि तू नारायणी महिषासुर मारयो।  
मां महिषासुर मारयो, नर नारीना नर नारीना रूपे,  
बाख्या-सर्वे मां, जयो-जयो मां जगदम्बे।

## श्री गीता मैया

करो आरती गीता जी की ॥  
जग की तारन हार त्रिवेणी, स्वर्गधाम की सुगम नसेनी |  
अपरम्पार शक्ति की देनी, जय हो सदा पुनीता की ॥  
ज्ञानदीन की दिव्य-ज्योती मां, सकल जगत की तुम विभूती मां |

महा निशातीत प्रभा पूर्णिमा, प्रबल शक्ति भय भीता की ॥ करो०

अर्जुन की तुम सदा दुलारी, सखा कृष्ण की प्राण प्यारी ।

षोडश कला पूर्ण विस्तारी, छाया नम्र विनीता की ॥ करो० ॥

श्याम का हित करने वाली, मन का सब मल हरने वाली ।

नव उमंग नित भरने वाली, परम प्रेरिका कान्हा की ॥ करो० ॥

## श्री गंगा मैया

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।  
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥

ॐ जय गंगे माता॥

चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।  
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥

ॐ जय गंगे माता॥

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।  
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता॥

ॐ जय गंगे माता॥

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।  
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता॥

ॐ जय गंगे माता॥

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।  
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता॥

ॐ जय गंगे माता॥

## श्री यमुना मैया

ॐ जय यमुना माता, हरि ॐ जय यमुना माता,  
नो नहावे फल पावे सुख सुख की दाता |ॐ  
पावन श्रीयमुना जल शीतल अगम बहै धारा,  
जो जन शरण से कर दिया निस्तारा |ॐ  
जो जन प्रातः ही उठकर नित्य स्नान करे,  
यम के त्रास न पावे जो नित्य ध्यान करे |ॐ  
कलिकाल में महिमा तुम्हारी अटल रही,  
तुम्हारा बड़ा महातम चारों वेद कही |ॐ  
आन तुम्हारे माता प्रभु अवतार लियो,  
नित्य निर्मल जल पीकर कंस को मार दियो |ॐ  
नमो मात भय हरणी शुभ मंगल करणी,  
मन 'बेचैन' भय है तुम बिन वैतरणी |ॐ

## श्री रामायण

आरती श्री रामायण जी की । कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बाल्मीकि बिग्यान बिसारद ॥  
शुक सनकादिक शेष अरु शारद । बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥1॥

आरती श्री रामायण जी की.....॥

गावत बेद पुरान अष्टदस । छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस ॥  
मुनि जन धन संतान को सरबस । सार अंश सम्मत सब ही की ॥2॥

आरती श्री रामायण जी की.....॥

गावत संतत शंभु भवानी । अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ॥  
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी । कागभुशुंडि गरुड़ के ही की ॥3॥

आरती श्री रामायण जी की.....॥

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी । सुभग सिंगार भगति जुबती की ॥  
दलनि रोग भव मूरि अमी की । तात मातु सब बिधि तुलसी की ॥4॥

आरती श्री रामायण जी की.....॥

## श्री गैया मैया

आरती श्री गैया मैया की  
आरती हरनि विशयधैया की  
अर्थकाम सद्गुण प्रदायिनी,  
अविचल अमल मुक्तिपदायिनी  
सुर मानव सौशांयाविधायिनी,  
प्यारी पूज्य नन्द छैया की  
अखिल बिस्व प्रतिपालिनी माता,  
मधुर अमिय दुग्धान्न प्रब्दाता  
रोग शोक सपट' परित्राता,  
भवसरनश्च हित दृढ नैया की  
आयु ओज आरोग्यविकाशिनी,  
दुद्रख दैन्य दारिद्र्य विनाशिनी  
सुष्मा सांख्य समृद्धि प्रकाशिनी,  
विसल विवेक बुद्धि दैया की  
सेवक हो चाहे दुखदाई,  
सा त्व सुधा पियावति माई  
शत्रु-मित्र सबको सुखदम्मी,  
स्नेह स्वभाव बिस्व जैया की